Lyceum India Journal of Social Sciences || ISSN: 3048-6513 (Online)
Volume: 2 Issue: 7 || December 2025 || DOI: 10.5281/zenodo.18784191

शिवानी साहित्य के विविध संवेदनायें व उनके आयाम

कु. सपना[1]

शिवानी हिन्दी की उन बड़ी कथाकारों में से है, जिन्होंने अपने पात्रों को बड़ी ममता और संवेदना से रचा है और उन्हें करूणा का एक ऐसा अक्षयकोश सौंप दिया है कि वे हमें बार–बार मानवीय करूणा और विडंबना की डबडबाई आँख के आगे लाकर खड़ा करते हैं। उनके पात्र अपनी संवेदना की अजस्र धारा में इस कदर बहा ले जाते हैं कि उनका कोई भी उपन्यास एक बार शुरू कर देने के बाद बीच में कहीं छोड़ देना असंभव है। हम मानो करूण नियति झेल रहे हैं, उनके पात्रों के साथ–साथ ही थपेड़े खाते हुए कथा के अंत तक पहुँचने के लिए विकल हो उठते हैं। यही शिवानी के उपन्यासों का जादुई सम्मोहन है, जो पाठकों को विभिन्न संवेदनाओं के द्वारा इस कदर बांध लेता है कि शिवानी के उपन्यास पढ़ लेने के बाद बार–बार उनके उपन्यास तलाशने में जुट जाते हैं।

मुख्य शब्द – कथाकार, शिवानी, ममता, करूणा एवं संवेदना

प्रस्तावना

संवेदन शब्द में 'सम्' उपसर्ग है। सम् उपसर्ग जुड़ने पर संवेद, संवेदन और संवेदना शब्द बनते हैं, जिनका सामान्य अर्थ क्रमशः अनुभव या वेदना, अनुभव या प्रतीति करना और सहानुभूति है।1 "साधारणतः संवेदन या संवेदना शब्द का अर्थ होता है अनुभव करना, सुख–दुःख आदि की प्रतीति करना, बोध, ज्ञान अथवा अनुभूति। अनुभूत, ज्ञान या विदित होना अर्थात् शरीर में किसी प्रकार का वेदन होना। संवेदन शब्द के मूल में 'वेद' शब्द है। वेद से वेदन और संवेदन शब्द बने हैं। हिन्दी में यह शब्द प्रायः सहृदयता, सहानुभूति (सहः+अनुभूति) के यथार्थ रूप में ही प्रचलित है।"2 अंग्रेजी में संवेदन के करीब पड़ने वाला शब्द है–सेन्सेशन फीलिंग, सेन्सटिवि अंग्रेजी पर्याय के अनुसार संवेदना शब्द के अंतर्गत इन्द्रियानुभव, भागानुभव, सहानुभूति, अनुभव प्राप्ति की प्रक्रिया आदि का समाहार हो जाता है।3 साहित्य में इस शब्द का प्रयोग इस सीमित अर्थ में नहीं किया गया है। विशेषतः जब हम मानवीय संवेदना की बात कहते हैं तो उसका आशय मात्र ज्ञानेन्द्रियों का अनुभव न रहकर मानव मन की अतल गहराइयों में छिपी करूणा, दया एवं सहानुभूति की उदात्त वृत्तियों तक हो जाता है। अपने व्यापक अर्थ में संवेदना अनुभूति का भी व्यंजक है।4

समग्रतः

संवेदना का अर्थ हुआ–वस्तुबोध की प्रक्रिया में मस्तिष्क की विशिष्ट उत्तेजना की भांति विह्लल हृदय से निःसृत विशिष्ट अर्थ दृष्टि। किसी के प्रति उपजी करूणा या दुःख को देखकर स्वयं भी वैसा ही अनुभव करना संवेदना है। आधुनिक

[1] *शोध छात्रा, सीएमजे विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय*

साहित्य संज्ञा कोश (गुजराती) में उसे अंतःक्षेत्र 'सम संवेदन' कहा गया है।5 भाषा, भाव और प्रेरणा तीनों ही प्रत्येक काल में संवेदना को नई अर्थवत्ता प्रदान करते हैं। इसी तरह संवेदना का मूल अर्थ हुआ अनुभूति करना, सहृदयता, सहानुभूति, करूणा, सम–संवेदन रूप से अभिव्यक्त करना, इन्द्रियानुभव आदि संवेदना के अर्थ की पुष्टि करते हैं।

संवेदना की व्याख्या करते हुए डॉ. रामदरश मिश्र का कथन है कि, "मानवीय संवेदनाएँ सामान्यतः एक सी होती हुई भी वैशिष्ट्य धारण करती रहती है। संवेदना का यह वैशिष्ट्य अपने आप में व्याख्येय नहीं हो सकता, वह अनुभव कराया जा सकता है और वह अनुभव जो कराया जा सकता है, विशिष्ट परिवेशों के माध्यम से।"6

मुक्तिबोध ने संवेदना शब्द को इस प्रकार से समझाया है–"संवेदना एक आंतरिक तत्व है जिसमें भाव, संवेग, मनोवृत्तियाँ, प्रच्छवन विचारों और अवधारणाओं का संयमित आवेग रहता है।"7 डॉ. देवी प्रसाद गुप्त ने संवेदना शब्द को इस प्रकार परिभाषित किया है – "साहित्यकारों की चेतनानुभूति की उस मनोदशा या अवस्था को संवेदना कहते हैं जो उसे सृजन की प्रेरणा, रचना विधान की क्षमता एवं लोक जीवन के प्रति आस्था प्रदान करती है।"8

उपर्युक्त सभी विद्वानों के विचारों के आधार पर हम कह सकते हैं कि विचारों में मतैक्य नहीं है। समग्र रूप से कथा–साहित्य के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि इसमें मानव मात्र की आशाओं–निराशाओं, सुख–दुःख, अपेक्षाओं, मान–अपमानों, राग–द्वेष, हर्ष–शोक, प्रेम–घृणा, विस्मय, उत्साह, कुंठा आदि के साथ–साथ सामाजिक विषमता, रूढ़ियों परम्पराओं में जकड़ा मजबूर मनुष्य और उसकी टूटती–बिखरती आशा, मध्यमवर्गीय तनाव, घुटन तथा अजनबीपन आदि की सोदेश्य अनुभूति करा देना एवं मनुष्य को मनुष्यत्व की पहचान करा देना वास्तविक अर्थ में संवेदना है।

विश्लेषण –

शिवानी जी को भारतीय साहित्य में मानवीय संवेदना का अवतार कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। शिवानी जी का दृष्टिकोण मानवतावादी रहा है, इसीलिए उनके अधिकांश, उपन्यासों में मनुष्य की मानवता व्याप्त है। उनका 'कृष्णकली' उपन्यास मानवीय संवेदना का उत्कृष्ट उदाहरण है। कली को बचाने के लिए डॉ. पैट्रिक दौड़ी–दौड़ी पार्वती के पास पहुँचती है, कहती है, "बच्चे में ईश्वर का अंश होता है, जानती है पार्वती। ईश्वर का गला घोटेंगी तू? इस जन्म में न जाने किन पूर्वकृत पापों का फल भोग रही है, परलोक की चिन्ता नहीं है तुझे?"9

कैंजा उपन्यास के माध्यम से मानवतावादी दृष्टिकोण संवेदना के स्तर पर व्यक्त हुआ है। उपन्यास की नायिका नंदी की शादी सुरेश के साथ नहीं हो पाती, जबकि सुरेश नंदी के प्रेम में पागल और बेचैन हो जाता है। वह निराशा, कुंठा और विवशता का शिकार होकर एक भंयकर सेक्स मैनियाक बन जाता है। एक रात गाँव की पगली कमला के साथ मुँह काला कर गाँव से भाग जाता है। कमला एक पुत्र रोहित को जन्म देकर मर जाती है। कुछ समय के पश्चात् रोहित को पिता का नाम दिलाने के लिए मृत्युशैय्या पर पडे सुरेश से नंदी विवाह कर लेती है। विवाह के कुछ क्षण पश्चात ही सुरेश की मृत्यु हो जाती है, उसी क्षण पगली कमला की माँ मालदारिन आती है और रोहित से कहती है – यह तो तेरी कैजा है, कैजा तेरी सौतेली माँ।10 मानवतावादी दृष्टिकोण एक मनुष्य को दूसरे मनुष्य से जोड़ने की कड़ी

है। मनुष्य के भीतर छिपे हुए देवत्व का परिचय ही मानवता है और संसार व्यवस्था भी इसके कारण ही चल रही है। मानवतावादी दृष्टिकोण को शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में गहराई से प्रकट किया है।

शिवानी जी ने मन की संवेदना अपने पति से सीखा है। शिवानी ने पति ही नहीं खोया एक सुदृ तथा हास्य के क्षण जीवन में आये। अस्थायी स्वास्थ लाभ से लेखिका पति के स्वास्थ्य के प्रति निश्चिन्त हो गई और अपनी भावी जीवन के पुनः सपने संजोने लगी। परन्तु एक दिन अर्धरात्रि में पति द्वारा चाय बनाने के आग्रह को नींद के आगोश में बंधी लेखिका ने ठुकरा दिया एवं नींद से छुटकारा पाते ही उसने देखा कि आग्रहकर्ता स्वयं चाय बनाकर प्याला लिए घूम–घूम कर चाय पी रहे हैं। आज पति के निधन के बाद लेखिका विकल है कि उसे जगाने वाला कोई नहीं, उसकी नींद भी उड़ाई है पति की बड़ी क्लान्त छाया, हांथ में प्याला लिये लेखिका को दिखती रहती है। अपने टूटते स्वास्थ्य को देखकर पंत जी ने कहा था कि उन्हें नौकरी के साथ–साथ जीवन से भी अवकाश लेना पड़ेगा। पन्त (लेखिका) का संस्कारी मन इस कटु सत्य को ग्रहण न कर अंधकार में कह उठा था–देख लीजियेगा आपके ही कंधों पर जाऊंगी। परन्तु लेखिका की करूणा दर्शनीय है–किन्तु कंधे चले गये मैं रह गई। लेखिका का उपरोक्त कथन किसी भी भारतीय धर्म परायण महिला को करूणा विगलित कर देने में समर्थ है। भारतीय संस्कृति में पली बढ़ी शिवानी जी का उस संस्कृति में अगाथ विश्वास है तथा वे उसमें आकंठ डूबी हुई है। क्षमाशील पति को जो तकलीफें समय–समय पर जाने अनजाने दी है उन्हीं की याद आज शत् शत् बन कर हृदय में चुभ रही है। यह वेदना केवल शिवानी जी की न होकर समस्त भारतीय नारी की वेदना है।

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः" जहाँ मनु ने नारी को पुरूष की सन्तति जीवन के साथ धर्म कार्यों में पुरूष की सहधर्मिणी कहा है, वहाँ उपनिषदों में भी उसे पूज्या प्रतिपादित किया है। पति द्वारा सम्पन्न समस्त कार्यों में उसका अर्धांश होने से नारी को अर्धांगिनी भी अभिहित किया गया है तथा समाज में कन्या (दुहिता), भगिनी वधू (पत्नी), माता, मातामही आदि विविध रूपों में उसका आदर किया है।12 अमृता प्रीतम ने लिखा है, "परछाइयों को पकड़ने वालों। छाती में जलती हुई आग की परछाई नहीं होती।"13

शिवानी जी ने भी नारी के प्रति अपनी अधिक संवेदना व्यक्त की है, 'किशुनली' उपन्यास में नारी के प्रति संवेदना काखी के द्वारा व्यक्त की गई है, "भाड़ में जाए तुम्हारे यजमान और तुम्हारा समाज। क्या अपनी इस अवस्था के लिए अकेली किसना ही अपराधिनी है, जिस हरामजादे कमीने ने इस नाबालिग, असहाय, उन्मादग्रस्त छोकरी का सर्वानाश किया है उसे ढूँढ़कर पकड़ लाए तुम्हारा समाज, तब मैं जाने। दोष किसी का और दण्ड कोई और भोगे, कहाॅ का न्याय है जी, किशुनली कहीं नही जाएगी। पालूॅगी उसकी संतान को भले ही तुम्हारी बिरादरी हमारा हुक्का पानी बंद कर दे। 14

रति–विलाप' उपन्यास में करसनदास पुत्र वधू के प्रति संवेदना व्यक्त करते हैं, "तुम निश्चय ही अनु को अपने साथ ले जा सकते हो। हर सुख मेरा अब उस पर कोई अधिकार नहीं रहा, अनु बेटी तुम अपने मामाजी के साथ जाना चाहो तो आज ही जा सकती हो। तुम्हारा हाथ–खर्च नियमित रूप से तुम्हारे पास पहुँच जाएगा।"15 पिता की पुत्री के प्रति

संवेदना 'कालिन्दी' उपन्यास में "नहीं बेटी तू यहीं रहेगी हमेशा मेरे पास। मैं तुझे पढ़ा लिखाकर इस योग्य बनाऊँगा अन्ना कि तू स्वयं ही अपना सहारा बन सके। 16

शिवानी जी का एक–एक उपन्यास चाहे 'कृष्णकली', 'मायापुरी', 'कालिन्दी', 'चौदह फेरे', 'बदला', 'पूतोंवाली', कोई भी हो, नारी संवेदना की मार्मिक अन्तर्वेदना को जिस आत्मीयता एवं गहराई के साथ महसूस किया है वह अतुलनीय है। नारी संवेदना की रोचकता से गूंथने की कला मर्मज्ञ थी शिवानी। शिवानी जी को स्त्री जीवन की गहरी समझ है जो कुछ अधूरा छूटा रह गया उसे भी लेखिका ने अपनी वैचारिक चेतना के जरिए तलाशा और उनकी ये तलाश एक मुकम्मल सोच के रूप में उनकी रचनाओं में दर्ज होती चली गयी। नारी–संवेदना की चतुर चितेरिन शिवानी स्त्री जीवन का अद्भुत रूप अपनी कलम की जादूगरी से बिखेरती चली हैं। शिवानी नारी संवेदना को रोचकता से गूँथने की कला में मर्मज्ञ थी। शिवानी जी नारी हृदय की पारखी रचनाकार रही हैं। वे भारतीय संस्कृति संस्कार में पली हुई एक ऐसी नारी थीं, जो दूसरी नारियों की पीड़ा, दुख दर्द को बड़ी सरलता से समझती थी और उनसे संवेदित होती रहती थी।

पर्दा–प्रथा किसी युग में भले ही संभ्रांत समाज में नारी के लिए उपयोगी रहीं हो परन्तु आधुनिक युग मे ं वह तो नारी की परतंत्रता का प्रतीक बन गई है। पर्दा प्रथा के कारण नारी जीवन का विकास ही अवरूद्ध हो गया है। शिवानी जी के उपन्यास चौदह फेरे में इस पर्दा प्रथा युग को भयंकर युग के नाम से अभिहित किया गया है। कर्नल के पितामह के भय से घर की सारी बहुएँ इस तरह पर्दे और अदब कायदे से बंधी रहती है कि कोई अपने पति से भी बात नहीं कर पाती। इस तरह कर्नल के परिवार की नारी पूर्णरूपेण परतंत्र, भयाक्रान्त एवं घुटनशील जीवन व्यतीत करती हैं, यहाँ लेखिका पर्दा प्रथा की पूर्ण समाप्ति का संकेत करती हुई कहती है– "मन ही मन प्रसन्नता के विमानों पर उड़ती घर की बहुएँ बड़ी देर तक रोती चीखती रही। एक भयंकर युग का अंत हो गया। वह गृह के स्वामी की नहीं, किसी विराट दानव की देह पड़ी थी, जिसके आतंक से नहान की बहू ने पति की भी अवहेलना कर दी थी।"17

शिवानी जी ने इस पर्दा प्रथा पर अपने उपन्यासों में कोई विशेष चर्चा नहीं की है फिर भी इस पर्दा प्रथा का विरोध अवश्य किया है। कालिन्दी उपन्यास की नायिका कालिंदी अपन स्वयं के विवाह में "नंगे सिर बारात के आमने–सामने खड़ी' होकर वर के पिता को भी झिड़कियों से चीर डालती है।"18

इस प्रकार नारी के विविध रूपों के प्रति लेखिका ने अपनी गहरी संवेदना व्यक्त की है। वे किसी भी रूप में नारी के मुक्त, सुखी रूप को देखना चाहती थी। वे किसी भी रूप में नारी को गुलाम या भोग्या के रूप में देखना नहीं चाहती थी। उनकी दृष्टि में यह अमानवीय व्यवहार मानवता के लिए कलंक है। शिवानी जी अपनी संवेदना और करूणधारा से लाखों पाठकों को इस कदर जोड़ लेती है कि पाठक भी पात्रों के साथ–साथ साँस लेते हैं। हँसते–रोते तथा कहकहे लगाते हैं तथा उदास होते हैं। इसके पीछे है उनकी संवेदना। यही संवेदना उनकी वेश्या के प्रति भी थी। 'श्मशान चम्पा' उपन्यास में कमलेश्वरी कहती है, "जिस नरक से मैं भागकर दूर चली गई थी वहीं अब मेरी बेटी पहुँच गई है, वह क्या मैं नहीं समझती।"19 जीवन की विडम्बना, परिस्थिति तथा संयोग ही नारी को वेश्या बनाता है। इसलिए शिवानी

जी की संवेदना बोलती है – वेश्यावृत्ति नारी को सहज स्वीकार नहीं होती, उसका मन उस जीवन से उबरने के लिए छटपटाता रहता है, तभी तो अंगूरी कहती हैं, "मेरी बेटी कभी हमारे पेशे से अपना मुँह काला नहीं करेगी।"20

'चौदह फेरे' उपन्यास में मल्लिका कहती है, "मुनष्य विवश होकर ही पाप करता है, स्वेच्छा से नहीं खुकु।"21 संयोगवसात् ही मल्लिका वेश्या बनने को मजबूर होती है। उसका पछतावा भी उसे होता है, अनजान आदमी मल्लिका को कहता है, "आप लोगों के कमरे में आने के लिए अनुमति की भी आवश्यकता है क्या? आप लोगों को तो हमारे कदम चूमकर हमें भीतर बुलाना होता है, वहीं धृष्ट युवक मुझे मेरे पेशे का प्रथम पाठ पढ़ा गया, सोचा क्यों न मैं यही पेशा अपना लूँ? मैं प्रौढ़ा थी, किन्तु सुन्दरी रूपसियों को अपने छलनामय संरक्षण में रखकर समृद्ध बन सकती थी, जो लड़कियॉ अब तक मुझे ठग रही थी, उन्हें यदि मेरे होस्टेल में रहना होगा तो मुझे कमीशन भी अनिवाग्र रूप से मिलना चाहिए नही ंतो मैं उन्हें ब्लैकमेल करूँगी। लड़कियॉ सब अच्छे घरों की थी, धीरे–धीरे मेरा कारोबार जम गया।22

संतान से वंचित रही वेश्या के प्रति संवेदना व्यक्त करते पन्ना कहती है, चप–चप का अमृत की घूंटे घुटकती काया को छाती से चिपकाकर पन्ना ने ऑंखे मूंद ली थी और पागलों की भांति स्वयं ही बड़बड़ा रही थी। यह तो तुम्हारा सरासर अन्याय है रोजी, यह भी कैसा मजाक था भला। तुमने इतने दिनों तक एक शब्द भी नहीं कहा, हाय मेरी बच्ची को सात दिनों तक बिना दूध के भूखा मार दिया तुमने...। वेश्या जीवन का चित्रण और उनके प्रति संवेदना का चित्रण प्रेमचंद युग पूर्व से लेकर आज तक होता आया है। शिवानी भी इससे अछूती नहीं रही। वेश्या घृणा के योग्य नहीं है, वह भी मानवी है, उसमें भी स्त्रीत्व की भावना है तथा वह प्रेम और विश्वास की भावना पाकर अन्य नारियों की भांति बन सकती है। इतिहास इस बात का साक्षी है कि नारी सदा से भोग्या के रूप में जीवन व्यतीत करती रही। पुरूष प्रधान समाज में नारी का अपना स्वतंत्र व्यक्तित्व नहीं रहा है। 'शयनेषु रंभा' कहकर उसे मात्र एक योनि तक सीमित रखा गया। एक विधवा के प्रति संवेदना व्यक्त करते 'रति–विलाप' उपन्यास में लेखिका कहती है, "अनसुइया पटेल नहीं अब अनसुइया कापाड़िया हूँ मैं .. वैसे अब इस नाम का कोई मतलब नहीं रहा, चाहने पर भी अपने मेडेन नाम की टहनी पर फिर फुदक सकती हूँ पर अब इन टूटे डैनों में दम नहीं है बहन।"23

संवेदना तब प्रकट होती है जब ससुर कापाड़िया की मृत्यु होती है, जो वृद्धावस्था में एक नवतरूणी हीरा के धोखे का शिकार होता है। यह हीरा धूल में पड़े लावारिस हीरे की तरह था, जिसे अनसुइया के स्नेह और स्पर्श ने माँजा और सँवारा। एक सम्मान पूर्ण जीवन दिया। पर इसकी जो चोट अनुसुइया ने झेली वह अकथनीय है संवेदनीय है। विधवा की आर्थिक स्थिति के ऊपर संवेदना "कौन सी ऐसी दौलत छोड़ गए हैं तुम्हारे भैया जो हम तुम्हारी भाभी को मखमली गद्दों पर लिटाएँ।''24 इस तरह विधवा जीवन पर शिवानी जी ने संवेदना प्रकट की है।

शिवानी जी के 'पाथेय' उपन्यास में विधवा जीवन की करूणता का उल्लेख दर्शनीय है। उपन्यास की नायिका तिलोत्तमा विवाह के कुछ ही दिनों बाद विधवा हो जाती है। अपने ससुर की नीचता और अनाचारिता से बचने के लिए वह पति गृह से भाग कर पितु गृह में शरण लेती है। तिलोत्तमा के पिता उसे टूटने नहीं देते और भविष्य में 'स्वावलंबी' बनाने

की सांत्वना देते हैं। अपने उदारवादी दृष्टिकोण का परिचय देते हुए तिलोत्तमा के पिता कहते हैं, "तू चिंता मत कर खुकु। अभी तेरा बाप जिन्दा है पढ़ा लिखा कर स्वावलंबी बना दूंगा। 25

लेखिका विधवा तिलोत्तमा को लंदन से डाक्टरेट की उपाधि दिलाकर युनिवर्सिटी के सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित कर देती है। इस तरह एक विधवा अबला को शिक्षा के माध्यम से सबला बना देने में लेखिका सफल रही है। संतानहीन नारी के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए लेखिका काखी की मनोव्यथा को हमारे सामने रखती है, "आज तक जिसने संतान सुख नहीं दिया, उसने आज स्वयं ही मेरी रीती कोख भर दी। काखी की आँखे छलछला उठी।''26 संतानहीन नारी के प्रति संवेदना व्यक्त करते शिवानी जी कहती हैं, किसी भी नारी को संतान नहीं होना एक अभिशाप है। संतानहीन नारी के साथ–साथ लेखिका ने बच्चों के प्रति भी संवेदना प्रकट की है, आधुनिक परिवार में पति पत्नी के बीच टकराव के कारण उनकी संतानों पर बुरा असर पड़ता है। बच्चों के मन में असुरक्षितता की भावना निर्माण करती है। माँ–बाप के प्यार से वंचित होने के कारण उनके बाल मन में कुण्ठा, हीनता की भावना, अकेलेपन की अनुभूति होने लगती है। शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में बाल–मनोविज्ञान के आधार पर बच्चों के प्रति संवेदना प्रकट की है। कुछ बच्चे घर की आर्थिक परिस्थिति के कारण मानसिक तौर पर टूट जाते हैं, उनके प्रति भी शिवानी जी ने संवेदना व्यक्त की है। मायापुरी उपन्यास में पिता की छत्रछाया खो चुके शोभा उम्र से ज्यादा समझदार हो चुकी है, घर की कमजोर हालत की वजह से दुर्गा मौसी के यहाँ रहकर पढ़ती है। उनके प्रति संवेदना व्यक्त करते शिवानी जी कहती है, शोभा का मुँह लज्जा से लाल हो उठा, वह कैसे कहे कि वह इसी गृह की आश्रिता है। उस महिमामयी राजदूत कन्या के सम्मुख वह पत्ते सी कांप उठी।27 विदेशी संस्कृति में बच्चों पर जो गुजरती है उसके प्रति संवेदना "जिस देश में उसने जन्म लिया था वहाँ लाड दुलार के लिए समय किसके पास रह सकता। जिन अधरो को कभी जननी के स्तनपान की अमृतघूंट नसीब नहीं हुई, तो उस नन्हें शिशु का बिरवा कुम्हलाता नहीं तो और क्या होता?"28 आधुनिक युग में माता–पिता के पास, बच्चों के लिए समय नहीं है, "लड़की वास्तव में बुद्धिमती थी, किन्तु उस बुद्धि को यथोचित संरक्षण नहीं मिला था। जैसे बहुत दिनों से काम में न लाई गई उत्कृष्ट विदेशी मशीन के कल–पुर्जो में भी उसके स्वामी की अवहेलना से लग गया जंग उन्हें जाम कर देता है, ऐसे ही लड़की के दिमागी जंग लगे कलपुर्जों की ओर भी शायद अब तक किसी ने ध्यान नहीं दिया था।"29 शिवानी जी ने निःसंतान नारी तथा बच्चों के प्रति संवेदना को अपने उपन्यासों के माध्यम से रखा है।

'रति विलाप' उपन्यास में अनसुइया की शादी उन्मादग्रस्त के साथ हो जाती है, उसके दाम्पत्य जीवन पर संवेदना व्यक्त करते हुए कहती है, ''जोवनियूँ चाल्यूँ जशे।' मुझे लगता जैसे वह बार–बार मुझे झकझोर कर चेतावनी दे रहा है, देर मतकर अनु तेरा यह यौवन फिर चला जाएगा।30 दाम्पत्य जीवन में पत्नी के प्रति संवेदना व्यक्त करते 'पूतोवाली' उपन्यास में कहती है, सुदर्शन पति की अति साधारण रूप रंगवाली पत्नी पार्वती के लिए विवाह के पश्चात् पति द्वारा जन्मी घोर उपेक्षा उसे एक अंतहीन बेकली में छटपटाने को बाध्य करती है। इसी प्रकार 'गैंडा', 'रथ्या' आदि उपन्यासों में दाम्पत्य जीवन के प्रति संवेदना व्यक्त हुई है। विचारधारा की भिन्नता तथा तनाव आदि बढ़ने से दाम्पत्य जीवन में दरार आ जाती है। शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में गहराई से दाम्पत्य जीवन का चित्रण प्रस्तुत किया है। बेटे से

तिरस्कृत वृद्ध माता–पिता की संवेदना "झूठी दिलासा मत दे बेटी, यह कभी ठीक नहीं होगी, इसकी चोट बहुत गहरी है, संतान ने ही गोली मारी है इसे, संतान की दागी गई गोली फिर चिता में हड्डियाँ चटकने पर ही निकलती है। तू कितनी ही बड़ी सर्जन क्यों न हो इसकी गोली कभी निकाल नहीं पाएगी ...।"31 एक वृद्ध पिता जिनकी पत्नी नहीं है, जिन्होंने अपना बेटा खो दिया है, विधवा बहू के साथ रहते हैं, उनके प्रति दुनिया जो सोचती है इससे वृद्ध पिता दुखी होते हैं। उनके प्रति संवेदना, "कल बड़ी रात तक बाग में घूमता रहा। लौटा तो सोचा, सागर पेशे का चक्कर लगाता चलूँ। मैंने अपने कानों से सुना मेरे नमक हराम भृत्य मेरे ही गले पर छुरी फेर रहे थे,, कह रहे थे–जान बूझकर ही तो रडुएँ बुड्ढ़े ने पागल लड़के को छत से ढकेल दिया जिससे उम्र भर सुन्दरी बहू के साथ गुलछर्रें उड़ा सके, पूरी जायदाद भी तो लिख दी है पाटन पटरानी के नाम।"32 वह बुढ़ापा जो जीवन के सारे मोड़ लॉघकर मौत की दहलीज पर खड़ा हो, जो बुढ़ापा बड़ी मुश्किल से काटता है, इन वृद्धजनों के प्रति गहरी मानवीय संवेदना का चित्रण शिवानी जी ने अपने उपन्यासों में किया है।

सैनिकों के प्रति संवेदना व्यक्त करते 'चौदह फेरे' उपन्यास में शिवानी जी लिखती हैं, इससे बड़ी करूणता क्या हो सकती है कि जिन्दा रहते व्यक्ति की तेरहवीं भी कर ली जाए और बाद में पता चले कि आदमी जिन्दा है। "अब क्या कहूँ बिट्टो ! ताई की पहाड़ सी छातियाँ साँसों के भूकम्प से डोल उठी राजू के मरने की खबर आई थी, सबसे श्रद्धा तेरहवीं भी मना ली। आज कोई बीस दिन हुए भैया के पास तार आया कि चीनियों ने जो कैदी छोड़े हैं उन्हीं में वह भी मिल गया है।''33 शिवानी जी की संवेदना सैनिकों तथा उनके परिवार वालों के प्रति रही। चौदह फेरे में पुत्र के लिए व्यग्र और गौर मोहन बाबू अश्रुपूरित नेत्रों से कहते हैं "पाण्डे अब क्या होगा? ..... तीनों कहाँ है मुझे यह भी पता नहीं है।"34

'श्मशान चम्पा' उपन्यास में लेखिका ने वेश्या नारी का उद्धार कर उसे समाज में सम्मानपूर्ण स्थान प्रदान करने का एक अद्भुत प्रयत्न किया है। अंगूरी बाई इस घृणित कार्य से क्षुब्ध होकर गुरू की शरण में चली जाती है। जहाँ वे अंगूरी बाई को नाच गाना छोड़ देने की शिक्षा देते हैं। साथ ही यह भी सलाह देते हैं कि यदि गाना ही तो ठप्पा, ठुमरी, दादरा छोड़ श्री रामचन्द्र का गुणगान कर। इस तरह अंगूरी बाई वेश्या गली को छोड़कर मंदिर प्रांगण में पहुंच जाती है। उसकी पुत्री कमलेश्वरीबाई कहती है, "जिनकी गायकी के सामने... वही गायकी अब तुलसीदास और रैदास के भजन।"35 इसी उपन्यास में शिवानी जी ने रईस परिवारों में वेश्या नारियों का विवाह करवा कर उन्हें समाज में मान–प्रतिष्ठा दिलवाई है। कमलेश्वरी चम्पा से कहती है, "वर्षों से छोटी नानी मयूरगंज के किसी जागीरदार की पत्नी बन, वहीं प्रतिष्ठित जीवन बिता रही थी। छोटी नारी के चचेरे देवर के पुत्र हैं मेरे पति। वहीं उन्होंने मुझे एक बार देखा और घर–भर से विरोध मोल लेकर मुझे ब्याह ले आए। अब यही मेरी काशी है।"36

'भैरवी' उपन्यास में महिम तिवारी की रखैल रामप्यारी रखैल का जीवन जीती है। पर अपने बच्चों को उच्च शिक्षा दिलाती है। पुत्र मिलिटरी एकेडमी में शिक्षा प्राप्त कर सेना का बड़ा अफसर बन जाता है और पुत्री अंग्रेजी शिक्षण संस्थान में पढ़ डाक्ट्रेट की उपाधि प्राप्त करती है। फिर स्वदेशी समाज उन्हें उतना मान–सम्मान नहीं दे पाएगा। अतः

Lyceum India Journal of Social Sciences || ISSN: 3048-6513 (Online)
Volume: 2 Issue: 7 || December 2025 || DOI: 10.5281/zenodo.18784191

उसकी पुत्री डॉ. विष्ट से कहती है, "मै विदेश में नौकरी करूँगी और तू वहीं आराम से माला जपना। क्योंकि यहाँ उसके पिछले जीवन के कलुष को क्या कभी स्वदेश का समाज मिटने देगा।''37 इन वर्णनों से स्पष्ट होता है कि शिवानी जी ने वेश्या एवं उनकी संतान को समाज में सम्मान जनक स्थान दिलाने का सफल प्रयास किया है। वास्तव में इन वैश्याओं के जीवन और उनकी विवशताओं को शिवानी जैसा साहित्यकार समझ सकता है और उनके प्रति संवेदित हो उनके कल्याण की कामना कर सकता है। शिवानी जी की कई कहानियों में प्रारम्भ में ही अन्त का संकेत मिलता है तथा कुछ कहानियाँ अन्त से आरम्भ होकर कथानक की घटनाओं पर आती हैं, ऐसी कहानियों में अक्सर 'पूर्व दीप्ति शैली' तथा 'चेतना प्रवाह शैली' का उपयोग होता है, जैसे पुष्पहार निर्वाण आदि कहानियाँ पुष्पहार का निम्नांकित वर्णन कहानी के अन्त का संकेत देता है।

'जन्म दिन' एक व्यंग्यात्मक झाँकी है, नित्य नवीनता का प्रेमी मानव शीघ्र ही एक वस्तु से ऊब नये परिवर्तन लाता है, इसका चित्रण लेखिका ने इसमें छोटे–छोटे उदाहरणों द्वारा दिया है, जैसे भारी सुस्वादु भोजन के बाद हलका भोजन अच्छा लगता है। जन्मदिन को नवीनता प्रदान करने के लिए नैनीताल के धनी परिवार ने जो स्वांग रचा तथा जिस दुर्गति का उन्हें सामना करना पड़ा। उसे बड़े ही कुशल शिल्प से लेखिका ने उकेरा है। नैनीताल में रहते हुए प्रतिवेशी धनी परिवार का बैरा एक दिन उन्हें उस घर में कुत्ते के जन्मदिन का कार्ड थमा गया, उसमें साथ ही स्वामिनी को भी आमंत्रित किया गया था। लेखिका के पास कुत्ता न होने के कारण वे स्वयं तो न जा सकी किन्तु वे पड़ोसी के यहाँ कर योजन पूर्ण रूप से देख सकी। पार्टी का भव्य आयोजन था तथा अतिथि अपने कुत्तों के साथ उपस्थित थे, तभी स्वान जाति अपनी स्वाभाविक प्रवृत्ति से भूक उठी एवं अपने को स्वामियों से छुड़ा लड़ पड़ी, 'ज्याजी' जाकर केक पर बैठ गया। भय की एक सार्वजनिक लहर दौड़ गई सारा इन्तजाम नष्ट हो गया। इस प्रकार लेखिका यह सिद्ध करना चाहती है कि किसी भी नवीनता को अपनाने से पूर्व उसके औचित्य और सौष्ठव के बारे में मनन आवश्यक है।

'परिवार नियोजन' में किसी अनाथ व्यक्ति के पत्र के आक्षेप का उत्तर देते हुए लेखिका ने उसे कायर कहा है जो छिप कर आरोप करता है, अपना नाम तक पत्र में न डाल कर। उन्होने कांग्रेस की तरफदारी करने के आक्षेप की सफाई देते हुए कांग्रेस की दीर्घ अवधि तक की गई सेवाओं का उल्लेख किया है। उनका मत है, नये चुनावों में हारने से हताश न हो उन्हें पुनः अपनी गौरव गरिमा स्थापित करनी चाहिए। बचपन में देखे एक असन्तुलित परिवार के उदाहरण ने ही लेखिका को परिवार नियोजन की समर्थक बनाया है किन्तु लेखिका ने कहा है कि कोई भी सुनियोजित प्रयोग यदि स्वयं अपनी सत्ता की प्रशक्ति का साधन बन व्यक्ति साक्षी बन जाता हे तो न वह शासन का हित कर सकता है न शासित का।38 'चुनाव खेलो लड़ों नहीं' में विनोबा भावे का कथन, चुनाव लड़ने का विषय नहीं खेलने का विषय है, को उद्धृत करते हुए लेखिका ने कहा है कि विनोबा जी का कथन सैद्धान्तिक है, प्रयोगिक नहीं। आज का एक ग्रामीण भी सत्ता के मद को समझता बूझता है, चुनाव पूरी ईमानदारी से लड़े जा सकते हैं। इस कथन में सत्यता नहीं क्योंकि संसार के किसी भी देश में चुनाव में सभी प्रकार के हथकंडे अपना लिये जाते हैं और सत्तालोलुप लोग राज्य करते हैं। अधिकांश जिन्हें सत्ता के प्रति कोई ललक नहीं है उन्हें चाहिये कि वे सजग होकर महावत का कार्य कर शासक पर अंकुश लगाये रहे। यदि जन मानस रूप महावत का यह अंकुश शासक रूपी गज पर न हो तो वह मत्त होकर संहार

कर सकता है। इस कारण आवश्यक है चुनाव सबल हो, निर्भय हो, सरल हो, लेखिका ने बापू के इस कथन को सार्थक माना है, लोकतंत्र दबाब देकर स्थपित नहीं किया जा सकता इसकी भावना तो हृदय से प्रस्फुटित होती है। लोकतंत्र बाहर से नहीं लादा जा सकता।

'औलाद और घोड़ा' में लेखिका ने अपने घर के फोन बिगड़ने और ठीक कराये जाने पर जिन आवाजों को फोन पकड़ने लगा वे किन्हीं दो युवा प्रेमियो ं के प्रेमालाप थे, उन्हें सुन लेखिका ने अभिभावकों को इसके लिए गैर जिम्मेदार माना है। उन्हें बचपन में घुडसवारी सीखते समय 'सिकन्दर मियाँ' का गुरू याद आया जो कहते थे हमेशा याद रक्खो, औलाद और घोड़े को साधने का एक ही गुर है, न लगाम में जरूरत से ज्यादा ढ़ील दो न जरूरत से ज्यादा ऐंच। जहाँ पैर जमीन पर टिकाकर अड़ने लगे, लगाम ढीली छोड़ दो, खुद राह पर आ जायेगा। पर खुदा न करे, कहीं वही लगाम अपनी जिद में खींच बैठी। तो तुम्हें जमीन पर पटक देगा।39 अतः जो अभिभावक अपने बेटे–बेटियों को उचित अनुशासन मे ं न रख निरंकुश छोड़ देते हैं वे ही उन्हें पथभ्रष्ट करते हैं।

'सम्पन्न पर सुखी नहीं' में लेखिका ने इस सत्य का उद्घाटन किया है कि इस संसार में सुख कोई भी नहीं, चाहे कोई वैभव सम्पन्न हो अथवा वैभव वंचित। लेखिका ने अपनी एक वैभाव सम्पन्न सहेली का चित्रण किया है, जिसका बच्चा धन के कारण किडनैप कर लिया जाता है, उस समय वह सहेली सोचती है कि यदि वह किसी भिखमंगे की बीबी होती तो उसे पुत्र वियोग न सहना पड़ता।

'मुखौटा' आधुनिक युग के दिखावटीपन एवं झूठे प्रलोभनों ने जनता का अविश्वासी बना दिया है। आज तो दिख रहा है, वह वास्तव में है नहीं, इसी बात को लेखिका ने साधुओं एवं मंत्रियों के माध्यम से व्यक्त किया है। एक ऐसे पहुंचे साधु जिनका लोग पूर्ण विश्वास करते थे, एकान्त में लेखिका की मित्र को देख वासना के प्यार में वह उसका हाथ पकड़ बैठे, आत्मरक्षा के प्रति सचेत उनकी मित्र भा निकली तथा साधु दीर्घ तपस्या के लिए बन चले गये। बाहरी दिखावे और आडम्बर की प्रवृत्ति इतनी बढ गयी है कि आज सन्त और ढोंगी का नीर–क्षीर विवेक असम्भव हो गया है। इसी प्रकार निरामिष भोजी बनने वाली मंत्री किस प्रकार भोजन पर टूट पड़े। मनुष्य का यही दो मुहाँ व्यक्तित्व उसे ले डूबता है।40 वास्तविकता यह है कि सच्चाई सामने आती नहीं, सभी रंगे सियार बने हुए हैं किन्तु रंग रोगन छूटने पर जो सचाई सामने आती है, वह जानलेवा होती है।

प्रत्येक युग का अपना एक बोध होता है, अपनी माँग होती है और किसी भी साहित्यकार की विशेषता एवं उसके व्यक्तित्व की पहचान उसके साहित्य में चित्रित युग चित्रण द्वारा संभव होती है। संवेदनशील साहित्यकार अपने युग के बोध या मांग की अवहेलना नहीं कर सकते क्योंकि मनुष्य के पारस्परिक सम्बन्धों में आगे बदलाव, मूल्यों और संवेदनाओं की नई स्थितियों की पहचान को ही युगबोध की संज्ञा दी जा सकती है।41 श्री नेमिचन्द्र जैन जी का कथन है, "व्यक्तियों के इन पारस्परिक सम्बन्धों, मूल्यों और संवेदनाओं के चित्रण से ही साहित्यकार के युग की पहचान होती है अपनी कृति को अपने तथा परवर्ती युगों में विशिष्टता तथा सार्थकता देने के लिए रचनाकार में अपने युग को ऐसी सहज पहचान ऐसी संवेदनशील चेतना आवश्यक है, जो उसे गतिमान जीवन के मूल्य और नियामक प्रेरणा स्रोतों से

अपने परिवेश के जीवन्त और विकासशील तत्वों से सम्बद्ध करें। अनुभूति और युगीन यथार्थ के बोध की समन्वित ही रचना की सार्थकता निर्धारित करती है।"42 शिवानी जी के सम्पूर्ण साहित्य में यह अनुभूति और युगीन यथार्थ के बोध की समन्वित हमें दिखाई पड़ती है। वे स्वातंत्रयोत्तर कथा लेखिका है तथा उनका नाम आधुनिक कथा लेखिकाओं से अग्रणी हैं। उन्होंने आज की समस्याओं टूटती परम्परा में बन रहे नये मूल्य, मर्यादा के नये मानदण्डों आदि को साहित्य में चित्रित किया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः शिवानी हिन्दी कथा साहित्य की शिरोमणि रचनाकार हैं, उन्होंने अपने रचना संसार कथा प्रसंगों को ममता और संवेदना से रचा है। उनकी मान्यता है कि मन की पवित्र तथा लोक जीवन की सच्चाई किसी भी उत्कृष्ट रचना का सृजन करती है। यही कारण है कि शिवानी जी ने अपने कथा प्रसंगों में गहरी संवेदना व्यक्त की है।

संदर्भ

1. महाजन, श्रीराम – आधुनिक हिन्दी कहानी साहित्य में काम मूलक संवेदना, पृष्ठ 103
2. भारद्वाज, डॉ. वीरेन्द्र – अग्निसागर संवेदना पक्ष, पृष्ठ 41
3. भारद्वाज, डॉ. वीरेन्द्र – अग्निसागर संवेदना पक्ष, पृष्ठ 41
4. यादव, ऊषा – हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवेदना, पृष्ठ 11
5. टोपीवाला, डॉ. चन्द्रकान्त – आधुनिक साहित्य संज्ञा कोष (गुजराती), पृष्ठ 85
6. मिश्र, डॉ. रामदरश – हिन्दी कहानी एक अंतरंग पहचान, पृष्ठ 39
7. भारद्वाज, डॉ. वीरेन्द्र – अग्निसागर, संवेदनापक्ष, पृष्ठ 43
8. गुप्ता, डॉ. देवीप्रसाद – दिनमान साहित्य सिद्धांत और समालोचना, पृष्ठ 221
9. श्रीवास्तव, अनीता – शिवानी स्मृति अंक, पृष्ठ 71
10. शिवानी – कैंजा, पृष्ठ 50
11. शिवानी – झरोखा, पृष्ठ 18
12. द्विवेदी, डॉ. कैलाशनाथ – कालिदास एवं भवभूति के नारी पात्र, पृष्ठ 10
13. श्रीवास्तव, अनीता – शिवानी स्मृति अंक, पृष्ठ 25
14. शिवानी – किशुनली की ढांढ, पृष्ठ 16
15. शिवानी – रतिविलाप, पृष्ठ 16
16. शिवानी – कालिन्दी, पृष्ठ 18
17. शिवानी – चौदह फेरे, पृष्ठ 10
18. शिवानी – कालिन्दी, पृष्ठ 46
19. शिवानी – श्मशान चम्पा, पृष्ठ 62

20. शिवानी – श्मशान चम्पा, पृष्ठ 63
21. शिवानी – चौदह फेरे, पृष्ठ 149
22. शिवानी – चौदह फेरे, पृष्ठ 150
23. शिवानी – रतिविलाप, पृष्ठ 84
24. शिवानी – श्मशान चम्पा, पृष्ठ 27
25. शिवानी – पाथेय, पृष्ठ 147
26. शिवानी – किशुनली, पृष्ठ 20
27. शिवानी – मायापुरी, पृष्ठ 125
28. शिवानी – अतिथि, पृष्ठ 209
29. शिवानी – अतिथि, पृष्ठ 100
30. शिवानी – पथेय, पृष्ठ 129
31. शिवानी – कालिन्दी, पृष्ठ 102
32. शिवानी – रति विलाप, पृष्ठ 24
33. शिवानी – चौदह फेरे, पृष्ठ 156
34. शिवानी – चौदह फेरे, पृष्ठ 98
35. शिवानी – श्मशान चम्पा, पृष्ठ 59
36. शिवानी – श्मशान चम्पा, पृष्ठ 60
37. शिवानी – भैरवी, पृष्ठ 42
38. शिवानी – झरोखा, पृष्ठ 57
39. शिवानी – झरोखा, पृष्ठ 66
40. शिवानी – झरोखा, पृष्ठ 84
41. सिंह, डॉ. सुषमा – स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में युगबोध की अभिव्यक्ति, पृष्ठ 5
42. सिंह, डॉ. सुषमा – स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी उपन्यासों में युगबोध की अभिव्यक्ति, पृष्ठ 8

Publisher's Note: *The views and opinions expressed in this article are those of the author(s) and do not necessarily reflect the official policy or position of the publisher or editorial board. The publisher assumes no responsibility for any consequences arising from the use of information contained herein.*